# डॉ. यशवंत सिंह

**हिंदी विभाग**

**मणिपुर विश्वविद्यालय, इंफाल**


# मणिपुरी समाज और संस्कृति

पूर्वोतर भारत का मणिपुरी समाज अपनी विविधतापूर्ण सतरंगी संस्कृति, बोलियों-भाषाओं की अनेकता, वेश-भूशा, खान-पान, नृत्य-गान और जीवन-पद्धति की सुरूचिपूर्णता के कारण आकर्षण का केन्द्रबिन्दु रहा है। मणिपुरी समाज को विविधतापूर्ण संस्कृति के आधार पर तीन समूहों में विभक्त किया जा सकता है – (१) मीतै या मैतै समूह (२) नागा समूह तथा (३) कुकी समूह। मणिपुर राज्य के मध्य भाग-घाटी या मैदानी क्षेत्र में मुख्यत: मीतै समुदाय के लोग निवास करते हैं जो राज्य का बहुसंख्यक वर्ग है। इसके अन्तर्गत-ब्राह्मण, आद्य मीतै, गौड़ीय मीतै (वैष्णव मतानुयायी), लोई (अनुसूचित जाति), पाङ्ल (मुस्लिम) तथा विष्णुप्रिया आदि जातियाँ सम्मिलित हैं। प्राचीन मीतै समुदाय के लोग अपने आद्य धर्म अर्थात् सनामही धर्म का पालन करते थे। वे प्रकृतिपूजक भी थे, जिसमें सूर्य, अग्नि, आकाश तथा सोरारेन (देवताओं के राजा) आदि की पूजा का विधान था। आंद्रो-स्थित 'मैं' अर्थात् अग्नि देवता का मंदिर इसका प्रमाण है। बाद में, अतिया गुरु शीदबा को सर्वश्रेष्ठ देवता माना गया। अतिया शीदबा, अपानबा एवं अशीबा उनके अवतार माने गये, जिन्हें कुमश: सृष्टिकर्त्ता, पोषणकर्त्ता एवं संहारक देवता कहा गया। साथ ही, इस धर्म में पाखङ्बा, सनामही एवं नोंङ्पोक नीङ्थौ प्रमुख देवता और लैमारेल सिदबी एवं पानथोइबी प्रमुख देवियाँ मानी गयीं।

ईसा की 15 वी शताब्दी से मणिपुर में विष्णु पूजा के प्रमाण मिलते हैं। कहते हैं कि यहाँ पर म्याँमार से विष्णु की एक मूर्ति लायी गयी, जिसकी स्थापना वर्तमान विष्णुपुर में की गयी तथा इसका साक्ष्य अभी-भी मौजूद है। 18 वीं शताब्दी में भक्ति-आंदोलन एवं बंगाल के चैतन्य महाप्रभु के प्रभाव से मणिपुर के अधिकांश मीतै लोग गौड़ीय वैष्णव धर्म के अनुयायी हो गये। जिसका प्रभाव मीतै जीवन-पद्धति में स्पष्ट परिलक्षित होता है। वर्तमान समय में इम्फाल शहरमें स्थित श्रीराधागोबिंद मंदिर एवं श्री विजयगोबिंद मंदिर में मीतै लोग परम्परागत ढंग से श्रीकृष्ण व राधा की पूजा-अर्चना करते हैं। लेकिन समय बदलने के साथ मीतै लोगों का रुझान अपने परम्परागत सनामही धर्म की ओर हो रहा है। इस तरह मीतै लोगों की जीवन-पद्धति में अपने परम्परागत सनामही धर्म एवं आगत गौड़ीय वैष्णव धर्म, दोनों का मिला-जुला रुप परिलक्षित होता है।

मणिपुर राज्य के घाटी के केन्द्रीय भाग को चारों ओर से घेरे हुए पहाड़ी भागों में नागा एवं कुकी जनजातीय समूहों के लोक निवास करते हैं। इनमें राज्य की पूर्वी, उत्तरी तथा

उत्तरी-पश्चिमी पहाड़ियों में नागा जनजातीय समूह के लोग निवास करतें हैं। जिनमें ताङ्खुल, कबुई, माओं, मरीङ्, पुरुम, मराम, चीरू, मथोन अंगामी आदि जनजातियाँ प्रमुख हैं। जबकि राज्य की दक्षिणी पहाड़ियों में कुकी जनजाति समूह के लोगों का निवास स्थान है। जिनमें थादौ, पाइते, हमार, वाइफै, गाइते, सिमते, चोथे, रालते आदि जनजातियाँ प्रमुख हैं। विदित हो कि स्वतंत्र भारत की प्रथम जनगणना में मणिपुर के नागा व कुकी दो आदिवासी समूहों का उल्लेख मिलता है। लेकिन वर्तमान में भारत सरकार ने मणिपुर राज्य में निवास कर रहे ३३ जनजातीय समूहों को संवैधानिक मान्यता प्रदान कर रखी है।मणिपुर के इन सभी जनजातीय समूह के लोगों की अपनी-अपनी परम्परागत धार्मिक मान्यताएँ एवं रीतिरिवाज हैं। लेकिन इनकी जीवन-पद्धति में भिन्नता की अपेक्षा समानता तथा सादृश्यता के तत्त्व अधिक विद्यमान मिलते हैं। इसका प्रमुख कारण इन जनजातीय समूहों का एक-जैसे प्राकृतिक-भौगोलिक परिवेश में सदियों से निवास करना है। मानव स्वभाव की दृष्टि से भी इन सभी जनजातियों में आश्चर्यजनक समानता पायी जाती है। ये प्राय: भोले-भाले, सरल-सहज, विश्वासी, निडर निर्भीक साहसी, भविष्य के प्रति लापरवाह, मस्त और वर्तमान को ही सब-कुछ मानने वाले होते हैं। शारीरिक संरचना में ये जनजातिया समूह मंगोल-वंशीय है, जो गौर वर्ण, सुंदर, स्वस्थ एवं मृदुभाषी होते हैं। पुरुष आमोदप्रिय, खुशमिजाज और कलात्मक अभिरुचि के होते हैं, जबकि महिलाएँ रूपवती, परिश्रमी, सौंदर्य-प्रिय तथा नृत्य-गान में कुशल होतीं हैं।

प्राचीन समय में ये जनजातीय समूह के लोग अपने परम्परागत आदिवासी धर्म का पालन करते थे। जिसमें प्रकृति पूजा के साथ 'टोटम' के विविध विधान सम्मिलित थे। ईसाई मिशनरियों के मणिपुर में आगमन के पश्चात् 1834 ई. के आसपास से इन्होंने ईसाई धर्म को स्वीकार करना शुरु किया। वर्तमान समय में इन 33 जनजातीय समूहों में से अधिकांश ने अपना परम्परागत धर्म छोड़कर ईसाई धर्म को स्वीकार कर लिया है। लेकिन ईसाई धर्म में परिवर्तित होने के बावजूद भी इन्होंने अपने परम्परागत रीतिरिवाजों एवं विश्वासों को नहीं छोड़ा है। अत: इनकी जीवन-शैली में उनके परम्परागत आदिवासी धर्म एवं नवागत ईसाई धर्म, दोनों का मिजा-जुला प्रभाव देखा जा सकता है।

मणिपुर राज्य में सम्पर्क, राजकाज, साहत्यि एवं संस्कृति की भाषा 'मणिपुरी' है, जिसको स्थानीय लोग 'मीतैलोन' कहते हैं। यहाँ 'मीतै' जातिसूचक शब्द है जबकि 'लोन' का अर्थ भाषा है। अत: मीतैलोन अर्थात् मणिपुरी, मणिपुर की घाटी में निवास करने वाले बहुसंख्यक मीतै समुदाय के लोगों की मातृभाषा है। पहाड़ों में निवास करने वाले नागा एवं कुकी जनजातीय समूह के लोग अपनी अलग -अलग तरह की 40 बोलियों-भाषाओं का व्यवहार करते हैं। लेकिन घाटी व पहाड़ के निवासियों के बीच मणिपुरी सम्पर्क भाषा का कार्य करती है। इसकी एक प्राचीन लिपि भी है, जिसे 'मीतै मयेक' कहा जाता है। मणिपुर में प्रचलित एक पौराणिक आख्यान में वर्णित है कि 'अतिया गुरू शीदबा ने सृष्टि की रचना के बाद अपने दोनों पुत्रों-सनामही और पाखङ्बा को मीतै भाषा में शिक्षा प्रदान की थी।' 'पहाड़ों' में निवास करने वाले जनजातीय समूहों के पास उनकी अपनी कोई लिपि नहीं थी। अत: ईसाई धर्म को स्वीकार करने के साथ ही उन्होंने रोमन लिपि को अपना लिया है। लेकिन ईसाई धर्म को अपनाने के पश्चात् अंग्रेजी शिक्षा के बढ़ते प्रभाव के कारण जनजातीय समूह के लोगों की रुचि अपने

परम्परागत रीति-रिवाजों एवं विश्वासों के प्रति कम हो रही है। उन्होंने ईसाई धर्म को अपनाने के साथ ही उसकी जीवन-पद्धति को भी स्वीकारना शुरु कर दिया है। जिससे वे अपने परम्परागत मौखिक ज्ञान को भूलते जा रहे हैं। अत: वह दिन दूर नहीं होगा जब ये जनजातीय समाज के लोग अपनी परम्परागत जीवन-पद्धति को पूर्णत: भुला चुके होंगे। जो कि उनकी मूलत: पहचान रही है, जिसे उनके पूर्वजों ने सदियों से संजोये रखा है।मणिपुर की घाटी में निवास करने वाले बहुसंख्यक मीतै समुदाय के लोगों में यद्यपि अपने परम्परागत सनामही धर्म के प्रति रुझान बढ़ रहा है। उन्होंने अपनी भाषा के संरक्षण के साथ ही प्राचीन लिपि 'मीतै मयेक' को पुनर्जीवित किया है तथा सामान्य जन में प्राचीन लिपि का प्रचलन बढ़ रहा है। ये शुभ संकेत हैं लेकिन मीतै नवयुवक बाजारवाद एवं अतिशय उपभोक्तावाद के बढ़ते प्रभाव का शिकार हो रहे हैं। भूमंडलीकरण रुपी दानव उनके भी सिर पर चड़कर बोल रहा है। यह चिंताजनक पहलू है जिसकी ओर '21वीं सदी का मणिपुर' नामक कविता में स्पष्ट संकेत मिलता है –

'लोक्ताक[1] पट जाएगी बैक के नोटों से,
हालीबुड-बस्तियाँ बसेगी खेतों में,
मोइराङ्[2] की मोरियाँ बनेगी मैरिन-ड्राइव,
हाथ में हाथ डाले घूमेंगे रेबेका-क्लाइव।
जेब तो भरी रहेगी, पर दिल होगा खाली,
कहाँ मिलेगी याओशङ्[3] पे पैसा पिरो[4] बालीं।
कहाँ छमक के थिरकेगा यह थाबलचोङ्बा[5],
स्वप्न हो जाएँगे शोइबुम, ङारी औ इरोन्बा।[6]
यार! बोड़ साहब तो तुम बना जाओगे, पर
एढ़ी तक बाल छहराने वाली सनातोम्बी[7]
कहाँ से पाओगे।'

युबा कवि किसुन सिंह 'इंफाली' की यह चिंता 21वीं सदी के प्रथम दो दशकों के उपरान्त ही सही साबित हो रही है। अत: जरूरत है कि मणिपुरी जनजातीय समाज के लोग नये धर्म को अपनाने के साथ ही अपनी परम्परागत जीवन-पद्धति के प्रति भी लगाव बनाये रखें। साथ ही, मीतै समाज के युवक बोड़ साहब मैक्सवेल की बजाय लोकप्रचलित आख्यान के नायक खम्बा को तथा युवतियाँ नायिका थोइबी को अपना आदर्श मानें। साथ ही, मणिपुरी नवयुवक अतिशय उपभोक्तावादी-बाजारवादी प्रवृत्तियों से अपने को बचाते हुए स्वामी विवेकानंद के ध्येय सूत्र 'मानव सेवा ही ईश्वर सेवा है' को अपनी जीवन-पद्धति में धारण करें। तभी मणिपुरी समाज और संस्कृति की परम्परागत पहचान को अक्षुण्य रखा जा सकता है।

**नोट:**

मणिपुर स्थित विशाल झील

मणिपुर का सांस्कृतिक शहर

मणिपुर का होली त्यौहार

होली के त्यौहार पर पैसा मांगना

मणिपुरी नृत्य विशेष

मणिपुर के प्रिय भोज्य पदार्थ

अंग्रेज अधिकारी मैक्सवेल